OM-10- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 27-Jul-21 1:48 PM Page 4

दादी का आगमन मात्र... सर्व में भर देता उमंग

जो भी उनके सानिध्य में आये, जो भी उनसे मिले, उनके दु:ख-दर्द मिट गये, कमी-कमज़ोरियां दूर हो गईं। उनके मन में खुशी और उमंग की लहरें लहराने लगीं। जैसे पारस के सम्पर्क में आने से लोहा भी सोना बन जाता, उसी तरह दादी के सम्बंध और सम्पर्क में जो भी आता, उसमें कुछ नया कर गुज़रने का जज़्बा पैदा हो जाता।

न सिर्फ कार्य सौंपा बल्कि योग्य भी बनाया

जब मैंने इस वरदान भूमि में प्रवेश किया, मात्र सोलह वर्ष की आयु थी। पर दादी जी ने भविष्य-दृष्टा की तरह मुझे उत्तरदायित्व भरे कार्य में व्यवस्थित कर दिया। आज उसका निर्वाह करते मुझे इतने वर्ष बीत गये, पता ही नहीं चलता। अब मैं महसूस करती हूँ कि वरदानी दादी जी मात्र कार्य ही नहीं सौंपती थीं, साथ ही साथ कार्यक्षमता और कार्य करने की कला भी अपनी ओजस्वी वाणी के माध्यम से सौंप देती थीं। इतना ही नहीं, निरंतर प्रातः से सायं की बहुत व्यस्त दिनचर्या में यह मेरा सौभाग्य था कि दिन भर में सैंकड़ों बार उनके सम्मुख जाना होता था। उनकी प्यार भरी दृष्टि पड़ती और मेरे अंदर उमंग-उत्साह लहरें मारने लगतीं। आज तक थकान कहते किसे हैं, मैंने नहीं जाना। क्योंकि ऐसा लगता था ये नज़रें दादी की नहीं, भगवान की हैं। वह ही मुझे नज़र से निहाल कर रहे हैं। ऐसी दादी माँ की व्यक्तिगत सेवा का सौभाग्य भी मुझे मिलता था तो अनेक अलौकिक अनुभूतियाँ उनके सानिध्य में होती थीं और लगता था कि उनकी दिव्य शक्ति स्पर्श मात्र से मुझमें प्रवेश कर रही है। दादी को अव्यक्त हुए चौदह वर्ष हो गए। दादी जी ने मुझे जो पालना और शिक्षायें दीं वो आज भी मुझे मदद कर रही हैं। मैंने दादी को एक फरिश्ते के रूप में देखा। दादी जितनी व्यस्त रहतीं उतनी ही हल्की रहतीं। न सिर्फ स्वयं लाइट थीं पर उनसे जो भी मिलते, जो भी उनके पास जाते उन्हें भी हल्का महसूस होता। दादी विश्व की दादी थी। जिम्मेवारियां सम्भालते हुए भी हरेक से प्रेम पूर्ण व सम्मान पूर्वक व्यवहार करते हुए भी न्यारी और प्यारी रहीं। हर कोई कहता दादी से मेरा अनन्य प्यार है। - **ब्र.कु. मुन्नी दीदी,संयुक्त प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़।**

विशाल संगठन को एकता के सूत्र में पिरोकर रखा

दादी जी की सबसे बड़ी विशेषता थी उनमें मैं-पन का सम्पूर्ण अभाव। हमने कभी भी उन्हें 'मैं' शब्द का उपयोग करते नहीं देखा। दादी जी के मुख्य प्रशासिका बनने से पहले भी मुम्बई में मुझे दादी जी के साथ रहने का अवसर मिला। उन्हें अपना विचार प्रकट करना भी होता था तो वे कहती थीं कि दादी का यह विचार है, दादी ऐसा करना चाहती है। हम सभी सामान्य रूप से यह कहते हैं कि यह मेरा विचार है, मैं यह करना चाहती हूँ। परन्तु दादी जी ने कभी 'मैं' या 'मेरा' शब्द का उपयोग नहीं किया। खुद का पार्ट भी वे साक्षी होकर बजाती थीं। उनके कर्म में ही बाबा की याद समाई होने के कारण उनके हर कर्म महान व श्रेष्ठ थे। उनमें कर्तापन का भान बिल्कुल नहीं था। वे सदा स्वयं को निमित्त व बाबा को करनकरावनहार समझती थीं। इस धारणा के कारण वे हर कर्म करते सहज न्यारी रहती थीं। वे सदा सभी को साथ लेकर चलतीं, इसलिए सभी उनसे प्रसन्न व संतुष्ट रहते। वे हम सभी बहनों को अपनी सखी की तरह प्यार व सम्मान देतीं। दादी सदा निष्पक्ष रहती थीं। वे कभी किसी पक्ष के प्रभाव में आकर निर्णय नहीं लेती थीं। बाबा की याद में रहने के कारण उनकी निर्णय शक्ति बहुत प्रबल थी। उनके अथॉरिटी भरे बोल ऐसे होते थे जो हर आत्मा दिल से स्वीकार करती थी कि दादी जी ने कहा माना बाबा ने कहा और मुझे करना ही है। वे क्षमाशील थीं। दादी में लव एवं लॉ का सुंदर संतुलन था। दादी जी ने कभी स्वयं को प्रमुख न मानकर निमित्त समझ सेवा की ज़िम्मेवारी सम्भाली। दादी का मन बहुत ही निर्मल था, किसी का अवगुण उनके चित्त पर ठहरता नहीं था। दादी ने अपनी ज्ञान व योग की ऊंची धारणाओं से सभी यज्ञवासियों को एकता के सूत्र में पिरोकर रखा। - **ब्र.कु. संतोष दीदी,संयुक्त प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़।**

सिम्पैथी से हरेक का कर देतीं उपचार

दादी जी को देखा मैंने एक अद्भुत शल्य चिकित्सक के रूप में। जहाँ एलोपैथी, होमियोपैथी या कोई अन्य पैथी उपयोगी सिद्ध नहीं होती, वहाँ पर 'सिम्पैथी' से मानव मन में गहराई से गड़े हुए विकृत शूलों को स्नेह से खींच कर निकाल देतीं और सामने वाला अलौकिक अनुभूति में डूबकर रह जाता। आश्चर्य करता कि वर्षों पुराना अवगुण आज दादी माँ की मीठी वाणी से सदा के लिए दूर हो गया। - **राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला,संयुक्त प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़।**

अद्वितीय था उनका प्रेमपूर्ण प्रशासन

हमारी दादी माँ एक कुशल प्रशासिका थीं। जहाँ उनमें सभी शक्तियाँ केन्द्रीभूत होकर उनके स्वरूप को तेजस्वी बनाती थीं, वहीं वह दिव्य स्नेह की वर्षा करते सम्पूर्ण संगठन को एक सूत्र में बांधतीं और सर्व को यथोचित सम्मान देकर, उनके सुझावों को भी महत्व देकर उन्हें यह गौरव देतीं कि इस कार्य में उनका भी महत्वपूर्ण सहयोग हो।
- **दादी रतनमोहिनी,मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़।**

हर व्यक्ति के लिए अहम स्थान दादी के हृदय में

दादी जी के हृदय में अपने हर सहयोगी भाई-बहन का महत्व था। वह हर एक के प्रति बहुत सहृदय थीं। उनका स्नेह भरा हृदय कब छलकने लगे और आप भीगने लगें, कुछ कहा नहीं जा सकता था। एक बार अचानक मुझे बाजू में दर्द का अनुभव हुआ। मैं छह बजे दादी जी से गुड मॉर्निंग करने गयी। दादी जी ने दृष्टि दी। ऐसा लगा कि ऊर्जा का प्रवाह हो रहा है और मेरे बाजू का दर्द खिंचता चला गया। मैं स्वयं को स्वस्थ अनुभव करने लगी। और इतना ही नहीं, दादी जी ने अपना स्वेटर उतार कर मुझे पहना दिया तो ऐसा लगा कि दादी का हृदय कितना विशाल है। मेरे नेत्र खुशी से भर आये। आज भी याद करके लगता है- इतना प्यार करेगा कौन! - **ब्र.कु. शशि प्रभा,संयुक्त प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़।**

मुझ पर विश्वास रख बढ़ाया आगे

दादीजी के असीम प्यार ने मुझे मधुबन की वरदानी भूमि से इतना जोड़ दिया जो मेरा यहाँ बार-बार आना होता रहा। जब भी स्कूलों में छूट्टियां होती थी तो मैं सेवा के लिए मधुबन आ जाती थी। दादी जी हमेशा मुझे कहती थी कि दादी जी की नज़र तुम पर है और उस नज़र ने मुझे हमेशा उनके करीब रखा। जब "ओम शांति भवन" में हम दोनों बहनें अव्यक्त बापदादा से मिल रहे थे तो दादी जी और सभी वरिष्ठ भाई-बहने चाहते थे कि हम कॉलेज की पढ़ाई न पढ़कर ईश्वरीय सेवओं में अपना योगदान दे जबकि हमारी इच्छा थी कि हम आगे पढ़ाई पढ़े। ऐसे में अव्यक्त बापदादा ने कहा कि पढ़ाई की ज़्यादा जरूरत नहीं है आप सेवा में जाओ। लेकिन हम दोनों बहनों ने कहा कि बाबा पढ़ाई पढ़ने की बहुत दिल है। तब दादी ने कहा कि बाबा इन दोनों को पढ़ाई की छुट्टी दे दो। दादी जी का विश्वास है कि ये पढ़ाई पूरी कर तुरंत सेवाओं में लग जायेंगी। तब अव्यक्त बापदादा ने भी कहा अच्छा ठीक है। ये थी दादीजी की दृढ़ता और विश्वास की शक्ति जिसने भगवान को भी मनाया और हमारे जीवन को भी महानता से भर दिया। फिर पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् मैंने प्रैक्टिकल मे करके दिखाया और मुझे कहा कि आपको दादीजी गामदेवी सेवाकेंद्र पर भेजना चाहती हैं। तब से लेकर आज तक मैं गामदेवी सेवाकेंद्र पर अपनी अथक सेवायें दे रही हूँ। जबकि मैं सौराष्ट्र(जूनागढ़) की थी, मेरे लिए ये स्थान बिल्कुल नया था लेकिन दादी जी के अमर बोल मेरे लिए वरदान बने रहे। दादीजी की खुद की सेवा की कर्मभूमि है। मेरे जीवन में कोई भी बात आती थी तो दादी जी बड़े प्यार से कहती थी दादीजी तुम्हारे साथ है और उनके ये बोल सुनकर मैं शक्तिशाली बन जाती थी। ऐसी महान विभूति आज भी सूक्ष्म में हमारे साथ हैं और रहेंगी।
- **राजयोगिनी ब्र.कु. निहा बहन,मुम्बई।**